International Journal of Applied and Universal Research **E- ISSN No: 2395-0269**
Volume VI, Issue VI, December 2019 Available online at: www.ijaur.com

लघु एवं कुटीर उद्योग : ग्रामीणों का जीवन आधार

ज्योति कुमरे
शोधार्थी, वाणिज्य विभाग,
शासकीय शहीद केदारनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊगंज, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश– लघु एवं कुटीर उद्योगों की प्रधानता प्राचीन काल से ही रही है। इन उद्योगों से ही समाज की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। लघु एवं कुटीर उद्योग कम पूँजी निवेश द्वारा एवं मशीनों का न्यूनतम प्रयोग द्वारा उत्पादन करने वाले होते हैं। इन उद्योगों में अधिकांश कार्य हांथ से किये जाते हैं।

यद्यपि अनेक समस्यायें भी हैं जैसे– कच्चे माल की समस्या, जागरूकता की कमी, सरकार द्वारा मिलने वाली अनुदान राशि की जानकारी का अभाव, प्रशिक्षण एवं निर्देशन की समस्या, उत्पदित माल की बिक्री हेतु बाजार की समस्या आदि।

कुछ सुझाव भी प्रस्तुत हैं जैसे– कच्चे माल की उपलब्धता बढ़ायी जानी चाहिए, सरकार द्वारा उपयोगी प्रशिक्षण पूंजी उत्पादन एवं मशीनों की पूर्ति की जानकारी चाहिए, निर्मित माल के लिये बाजार उपलब्ध कराये जाने चाहिए, माल को प्रदर्शित करने का मौका प्रदान किया जाना आदि।

आधुनिक औद्योगिक उन्नति के बावजूद लघु एवं कुटीर उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं का प्रयोग घर–घर में होता है। इनके बिना परिवार की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जा सकता है।

मुख्य शब्दः– लघु एवं कुटीर उद्योगों, औद्योगिक उन्नति ग्रामीणों का जीवन आधार।

प्रस्तावनाः–

लघु एवं कुटीर उद्योगों की प्रधानता प्राचीन काल से ही रही है। इन उद्योगों से ही समाज की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति होती चली आ रही है। वर्तमान में विकसित और विकासशील राष्ट्रों में लघु एवं कुटीर उद्योगों की आवश्यकता और अधिक महत्वपूर्ण है। खासतौर पर भारत देश की अधिकांश आबादी ग्रामीण है और वहाँ धन एवं साधन का अभाव पाया जाता है। इसलिये ग्रामीण क्षेत्र की आर्थिक समस्याओं के निवारण के लिये लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास होना आवश्यक है। फलतः लघु एवं कुटीर उद्योग कम पूँजी निवेश द्वारा एवं मशीनों का न्यूनतम प्रयोग द्वारा उत्पादन करने वाले उद्योग होते हैं। इन उद्योगों में अधिकांश कार्य हाँथ से किये जाते हैं। इन उद्योगों में आर्थिक शक्ति का केन्द्रीयकरण नहीं होता है तथा इनमें सम्पत्तियों की असमानता को कम करने में असमर्थ होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ये उद्योग उनके जीवन–यापन एवं आवश्यकताओं की संतुष्टि करने में सहायक होते हैं। भारत की अधिकांश जनसंख्या कम आय पर जीने वाली है तथा उनकी समस्त आवश्यकतायें लघु एवं कुटीर उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विक्रय से प्राप्त होती है। ग्रामीण आर्थिक संरचना में इन उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान है। शहरों के पिछड़े वर्ग एवं साधन विहीन लोगों के लिये ये उद्योग जीवन को सहारा देते हैं। उत्पादित वस्तुओं शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में अन्तर होता है। शिक्षा एवं जागरूकता के बावजूद इन उद्योगों का महत्व कम नहीं हुआ है। यदि समुचित पूँजी और तकनीकी ज्ञान उपलब्ध करा दिया जाय तो इनसे उत्पादित वस्तुओं द्वारा घरेलू आवश्यकता के साथ–साथ निर्यात योग्य वस्तुएँ बनाकर बहुमूल्य विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के साधन हो सकते हैं।

शोध–प्रविधि :–

शोधकार्य को पूरा करने के लिये शोध विधियों का प्रयोग किया गया है। समंकों का संग्रहण प्रत्यक्ष साक्षात्कार द्वारा किया गया है। द्वितीयक समंकों का भी प्रयोग लघु एवं कुटीर उद्योगों से संबंधित पुस्तकों, सरकारी प्रकाशनों, साहित्यों, प्रतिवेदनों, गजट, अधिसूचनाएं, धार्मिक ग्रंथों, जर्नलों, पत्र–पत्रिकाओं एवं संचार माध्यमों से प्राप्त किया गया है। तदनुसार कुछ वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

परिकल्पना :–

- लघु एवं कुटीर उद्योग ग्रामीणों के जीवन का आधार है।
- लघु एवं कुटीर उद्योग उद्योगों का संचालन अभी भी परम्परागत ढंग से किया जा रहा है।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों का प्रचार–प्रसार नहीं किया जाता है।
- लघु एं कुटीर उद्योगों में आधुनिक तकनीकों एवं मशीनों आदि का प्रयोग नहीं हुआ है।
- इन उद्योगों को कच्चा माल पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाता है।

- इन उद्योगों के विकास के लिये शासन द्वारा बनाई गई नीतियों का समुचित पालन नहीं हुआ है।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों को कच्चा माल मंहगा मिलता है।
- इन उद्योगों से उत्पादित वस्तुओं के विपणन के लिये समुचित व्यवस्था नहीं है एवं उनका शोषण होता है।

उद्देश्य :–

- शासन द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- आर्थिक विकास हेतु जागरूकता लाना।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों की वर्तमान पूँजी निवेश एवं प्रगति की जानकारी प्राप्त करना।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों की समस्याओं का पता लगाना एवं उनके समस्याओं के समाधान हेतु उचित सुझाव देना।
- लघु एवं कुटीर योजनाओं से संबंधित लोगों को प्रशिक्षण हेतु तैयार करना।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों को अधिक रोजगारोन्मुख बनाने का सुझाव देना।
- सस्ते मूल्य पर कच्चा माल उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

विषय–विश्लेषण :–

भारत ग्रामों का देश है। यहाँ की 75 प्रतिशत के लगभग आबादी ग्रामों में निवास करती है। जिनके जीवका का आधार कृषि के पश्चात् स्थानीय कच्चे माल पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योग है। देश के विभिन्न भागों में अलग–अलग कच्ची सामग्री प्राप्त होती है उन पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योग अलग–अलग प्रकार के होते हैं। जैसे– राजस्थान में हाँथी दांत एवं ऊंट के चमड़े से उत्पादित चमड़े की वस्तुएँ केरल में नारियल के रेशे से रस्सी, मशाले के उद्योग, कश्मीर में ऊनी साल, कन्नौज में इत्र, मध्यप्रदेश के रीवा जिले में सुपाड़ी के खिलौने, बांस एवं मिट्टी के बर्तन उद्योग संचालित है। ये परम्परागत उद्योग हैं एवं इनकी उत्पादन प्रक्रिया भी परम्परागत ढंग से संचालित की जाती है। रीवा जिले में विभिन्न प्रकार के लघु एवं कुटीर उद्योग संचालित हैं–

सारणी क्रमांक–1

रीवा जिले में लघु एवं कुटीर उद्योगों की इकाईयों की जानकारी

क्रमांक	उद्योगों के नाम	कार्यरत इकाईयों की संख्या	कार्यरत श्रमिकों की संख्या
1.	सिलाई एवं कढ़ाई उद्योग	105	571
2.	बांस उद्योग	65	343
3.	बढ़ई गीरी उद्योग	83	414
4.	लोहारी उद्योग	66	263
5.	सुनारी उद्योग	62	185
6.	ऊनी कम्बल उद्योग	27	139
7.	मिट्टी के बर्तन उद्योग	33	207
8.	बीड़ी उद्योग	75	349
9.	झाड़ू एवं कूंचा उद्योग	24	72
10.	दोना–पत्तल उद्योग	21	64
कुल योग		**561**	**2607**

स्त्रोत : 1. महाप्रबन्धक, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र रीवा (म.प्र.)
2. जिला सांख्यिकी पुस्तिका वर्ष 2016
3. सर्वेक्षण के आधार पर।

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन करने से मालूम होता है कि रीवा जिले में संचालित लघु एवं कुटीर उद्योग में इकाईयों की सर्वाधिक संख्या 105 सिलाई एवं कढ़ाई उद्योग की है तथा सबसे न्यूनतम संख्या 21 दोना–पत्तल उद्योग की है। इन कार्यरत इकाईयों में सर्वाधिक श्रमिकों की संख्या 571 सिलाई एवं कढ़ाई उद्योग में है तथा न्यूनतम श्रमिकों की संख्या 64 दोना–पत्तल उद्योग में है। जिले में संचालित कार्यरत इकाईयों की संख्या एवं श्रमिकों की संख्या अभी कम है। वर्तमान समय में घरेलू वस्तुओं की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये लघु एवं कुटीर उद्योग की इकाईयों को और बढ़ाया जाना चाहिए। इन उद्योगों से समाज के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति तो होती ही है और साथ ही साथ कई व्यक्तियों को रोजगार भी प्राप्त होता है। इसलिये इन उद्योगों के विकास के लिये सरकार को और पहल करने की आवश्यकता है। इन उद्योगों को संचालित करने के लिये कम पूँजी, कम कच्चा माल, कम मशीनरी की आवश्यकता होती है। इसलिए इन उद्योगों को आसानी से संचालित किया जा सकता है और आर्थिक विकास किया जा सकता हैं

समस्यायें :–

- कच्चे माल की समस्या जैसे– बांस एवं मिट्टी।
- उद्यमियों में जागरूकता की कमी।
- सरकार द्वारा मिलने वाली अनुदान राशि की जानकारी का अभाव।
- तकनीकी ज्ञान एवं मशीनों का कम प्रयोग।

- प्रोत्साहन का अभाव।
- निर्मित वस्तुओं का प्रचार–प्रसार की समस्या।
- पूँजी के अभाव के कारण विस्तार की सम्भावना नहीं।
- प्रशिक्षण एवं निर्देशन की समस्या।
- उत्पादित माल की बिक्री हेतु बाजार की समस्या।
- समाज द्वारा उपेक्षापूर्ण व्यवहार।

सुझाव :–

- क्षेत्रीय, ग्रामीण एवं शहरी असमानताओं को दूर किया जाना चाहिए।
- कच्चे माल की उपलब्धता बढ़ायी जानी चाहिए।
- कच्चे माल को सस्ते दरों पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- परिवहन साधनों की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- उपयोगी शिक्षा एवं जागरूकता को बढ़ावा देना चाहिए।
- सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के शर्तों एवं नियमों में सरलता लानी चाहिए।
- प्रोत्साहन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- सरकार द्वारा उपयोगी प्रशिक्षण पूँजी उत्पादन एवं मशीनों की पूर्ति की जानी चाहिए।
- निर्मित माल के लिये बाजार उपलब्ध कराये जाने चाहिए।
- सरकार द्वारा प्रदर्शियों एवं मेलों के माध्यम से लघु एवं कुटीर उद्योगों के उत्पादित माल को प्रदर्शित करने का मौका प्रदान किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :–

लघु एवं कुटीर उद्योग राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक औद्योगिक उन्नति के बावजूद लघु एवं कुटीर उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं का प्रयोग घर–घर में होता है। इनके बिना परिवार की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जा सकता है तथा भारतीय परम्परागत कलात्मक रचनाओं के लिये जीवित रखना आवश्यक है। इनके उपयोग के साथ–साथ निर्यात संवर्धन कर विदेशी मुद्रा का अर्जन एवं विदेशों से मधुर संबंध स्थापित करने में सहायता मिलती है।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. लघु एवं कुटीर उद्योग (स्मॉल स्केल इण्डस्ट्रीज) – एन. पी.सी.एस. (क्रियेटिव) ब्तमंजपअम च्नइसपबंजपवद 106.म कमला नगर, दिल्ली।
2. समाचार पत्र–पत्रिकाएँ, दूरदर्शन।
3. सामाजिक शोध एवं सांख्यिकीय – साहित्य भवन आगरा, वर्ष 2013
4. प्रतियोगिता दर्पण तथा योजना।
5. रीवा जिले का वर्तमान औद्योगिक परिदृश्य एवं वर्ष 2020 परिकल्पना – जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र रीवा (म.प्र
6. जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र रीवा द्वारा संचालित स्व–रोजगार योजनायें।
7. इन्टरनेट।